International Journal in Management and Social Science
Volume 09 Issue 02, Feb 2021 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal Web of Science ResearcherID JTT-2321-1784

प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में ग्राम प्रधान की भूमिका – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Dr. Rajesh Kumar, Assistant Registrar,
Shri Vishwakarma Skill University Palwal Haryana

भूमिका

नवजात शिशु असहाय तथा असामाजिक होता है। वह न बोलना जानता है न चलना फिरना। उसका न कोई मित्र होता है और न शत्रु। यही नहीं उसे समाज के रीति रिवाजों तथा परम्पराओं का भी ज्ञान नहीं होता और न ही उसमें किसी आदर्श तथा मूल्य को प्राप्त करने की जिज्ञासा पाई जाती है। परन्तु जैसे–जैसे वह बड़ा होता जाता है वैसे–वैसे उस पर शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों का प्रभाव पड़ता जाता है। इस प्रभाव के कारण जहाँ एक ओर शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता जाता है। वहां दूसरी ओर उसमें सामाजिक भावना भी विकसित होती जाती है। परिणामस्वरूप वह शनैः शनैः प्रौढ़ व्यक्तियों के उतरदायित्वों को सफलतापूर्वक निभाने योग्य बन जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि बालक के व्यवहार में वांच्छनीय परिवर्तन करने के लिए व्यवस्थित शिक्षा की परम आवश्यकता है। सच तो यह है कि शिक्षा से इतने लाभ है कि उनका वर्णन करना कठिन है। इस संदर्भ में यहां केवल इतना कह देना ही पर्याप्त होगा कि शिक्षा माता–पिता के समान पालन–पोषण करती है, पिता के समान उचित मार्ग दर्शन द्वारा अपने कार्यो में लगाती है तथा माता की भांति सांसारिक चिन्ताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है।

प्राथमिक स्तर की शिक्षा व्यवस्था :–

प्राथमिक शिक्षा का वास्तविक अर्थ है शिक्षा का प्रारम्भ। अतः प्रारम्भिक शिक्षा, शिक्षा का वह स्तर है जिस में बालक विद्यालय में प्रवेश पाकर वास्तविक विधिवत रूप से अध्ययन प्रारम्भ कर देता है। प्राथमिक शिक्षा के माध्यम से बालक शिक्षारूपी विशाल भवन में प्रवेश पाता है। यही से उस बालक की शिक्षा प्रारम्भ होती है और यही शिक्षा उसकी शिक्षा का प्रथम सोपान है इसी शिक्षा के दौरान बालक किसी विद्यालय में प्रवेश पाकर विधिवत् रूप से शिक्षा ग्रहण करना प्रारम्भ करता है।

जनतन्त्र के लिए शिक्षा की आवश्यकता :–

शिक्षा के क्षेत्र में जनतन्त्र के सिद्धान्तों तथा मूल्यों का समावेश अभी कुछ वर्ष पूर्व से ही हुआ है। इस महत्वपूर्ण परिवर्तन का श्रेय अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री **जॉन डेवी** को जाता है। उसने बताया कि एक जनतन्त्रीय समाज में ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक कार्यो तथा सम्बन्धों में निजी रूप से रूचि ले सके। इस शिक्षा को मनुष्य में प्रत्येक सामाजिक परिवर्तनों को दृढ़तापूर्वक स्वीकार करने की सामर्थ्य उत्पन्न करनी चाहिए। डीवी के इस कथन से जनतन्त्र के सिद्धान्तों तथा मूल्यों का प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में किया जाने लगा। परिणामस्वरूप अब दिन–प्रतिदिन जनसाधारण की शिक्षा का आन्दोलन चारों ओर जोर पकड़ता जा रहा है। ठीक भी है शिक्षित होने पर ही व्यक्ति अपने अधिकारों के सम्बन्ध में जागरूक हो सकता है तथा अपने कर्तव्यों को जनहित के लिए निभाने में तत्पर हो सकता है। अशिक्षित जनता अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों को नहीं समझ पाती। इससे देश में सत्ताधारियों का एक ऐसा वर्ग बन जाता है जो दूसरे व्यक्तियों के ऊपर अपनी इच्छाओं को थोपने लगता है। इससे जनतन्त्र का मुख्य लक्ष्य नष्ट हो जाता है। चूँकि जनतन्त्रीय व्यवस्था में देश के सभी नागरिक शासन में भाग लेते हैं, इसलिए उन सब में शिक्षा के द्वारा इतनी योग्यता अवश्य उत्पन्न की जानी चाहिए कि वे मतदान के महत्व को समझते हुए अपने कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों को सफलतापूर्वक निभा सकें। इसी दृष्टि से अब जनतन्त्र की रक्षा के लिए प्रत्येक जनतन्त्रीय देश में सर्वसाधारण की अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की जा रही है।

पंचायती राज की अवधारणा की उत्पत्ति और विकास

पंचायती राज संस्थाएं स्वशासन की बुनियादी इकाईयाँ हैं। ये प्राचीन भारत में ग्रामीण प्रबंधन और झगड़ों के निपटारे की भूमिका निभाती थी। मध्यकाल में भी उनका महत्व बना रहा इसलिए भारत के अस्थायी गवर्नर जनरल चार्लस मेटकाफ (1835–36) ने भारतीय ग्रामीण समुदायों को लघु गणतन्त्र की संज्ञा दी।

महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान ग्रामीण समाज की राजनैतिक लाम्बन्दी के लिए ग्राम स्वराज का आह्वान किया था। उनका कहना था कि सच्ची स्वतंत्रता सबसे निचले स्तर पर अर्थात पंचायत स्तर पर शुरू होती है। वे भारत को राजनैतिक रूप से स्वतंत्र और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर ग्रामों का राष्ट्रमण्डल बनाना चाहते थे, इसलिए भारतीय संविधान के निर्माताओं ने राज्य नीति के निदेशक सिद्धान्तों के अनुच्छेद 40 में निम्न व्यवस्था की ।

राज्य ग्राम पंचायतों को संगठित करने के लिए कदम उठाएगा और उन्हें ऐसी शक्तियाँ और सत्ता प्रदान करेगा जो उन्हें स्वशासन की इकाईयों के रूप में कार्य करने योग्य बनाने के लिए आवश्यक हों।

ग्राम प्रधान की शक्तियां तथा कर्तव्य

- ग्राम सभा और ग्राम पंचायत की बैठक बुलाना।
- इनका संचालन और अध्यक्षता करना।
- ग्राम पंचायत के कार्यकारी और वित्तीय प्रशासन का उतरदायित्व।
- ग्राम पंचायत के स्टाफ, अन्य अधिकारियों और कर्मचारियों जो किसी अन्य अधिकरण के द्वारा ग्राम पंचायत को सौंपे गए हो, के कार्यों की प्रशासनिक देखरेख और नियन्त्रण।
- अधिनियम से सम्बन्धित कार्यवाही को पूरा करना।
- ऐसी शक्तियों का प्रयोग करना, कार्यों को पूरा करना तथा कर्तव्यों को निभाना, जो कि हरियाणा पंचायती राज अधिनियम 1994 या उस पर आधारित नियमों के द्वारा ग्राम पंचायत को सोपें जाये।
- ऐसी शक्तियों, कार्यों और कर्तव्यों को पूरा करना, जो ग्राम पंचायत किसी सामान्य या विशेष प्रस्ताव के आधार पर ग्राम प्रधान को सौंपे या सरकार के द्वारा सौंपे जाये।

अध्ययन की आवश्यकता –

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सरकार ने अनेकों नीतियों तथा कमेटियों के द्वारा प्राथमिक शिक्षा की जागरूकता के लिए अनेक प्रयत्न किए। जिस कार्य में उसे काफी सीमा तक सफलता की प्राप्ति हुई। जो उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले से लेकर अब तक चल रहे है वे निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करने का कारण है। यह समस्या अधिकतर गांवों में देखी जाती है, क्योंकि जिस प्रकार शहरों में स्थानीय संस्थाओं तथा प्रशासन के द्वारा प्राथमिक शिक्षा के विकास में सक्रिय योगदान देकर सहायता की जाती है, उसी प्रकार सरकार गावों में प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अनेक प्रयत्न कर रही है। जिसके लिए ग्राम शिक्षा समिति का गठन किया जाता है जोकि प्राथमिक शिक्षा के विकास हेतु चलाई गयी सरकारी योजनाओं की देखरेख करे व उनके क्रियान्वयन को सुचारू रूप से चलने में सहयोग करे। किंतु फिर भी यह समस्या उसी प्रकार बनी हुई है। सरकार के इस उद्देश्य को प्राप्त करने में ग्राम प्रधान का काफी महत्वपूर्ण स्थान है।

प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में ग्राम प्रधान की भूमिका, ग्राम प्रधान का महत्व व विकास में योगदान का अध्ययन करना इस अध्ययन का उद्देश्य है। ग्राम प्रधान की सक्रिय भूमिका प्राथमिक शिक्षा के विकास पर क्या प्रभाव डालती है तथा प्राथमिक शिक्षा के विकास के लिए सरकार द्वारा चलाई गयी योजनाओं के क्रियान्वयन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना व ग्राम प्रधान द्वारा योजनाओं के क्रियान्वयन में सहयोग व प्राथमिक शिक्षा के विकास में आ रही बाधाओं को दूर करने में सहयोग से शिक्षा के विकास पर कितना प्रभाव पड़ता है तथा ग्राम प्रधान व ग्राम पंचायत जैसी संस्थाओं को क्या शिक्षा के क्षेत्र में हस्तक्षेप करना चाहिए अथवा नही जैसे पहलुओं पर अध्ययन करने हेतु अध्ययनकर्ता द्वारा इस विषय का चुनाव किया गया है।

समस्या कथन –

''प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में ग्राम प्रधान की भूमिका – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।''

अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण –

विकास – हरलॉक के अनुसार, ''विकास अभिवृद्धि तक ही सीमित नही है। इसके अलावा प्रौढ़ावस्था के लक्ष्य की ओर परिवर्तन क्रम निहित रहता है। विकास के परिणामस्वरूप व्यक्ति में नवीन विशेषताएं और नवीन योग्यताएँ प्रकट होती हैं।''

ग्राम प्रधान – लोकतांत्रिक प्रक्रिया में गांव के लोगों दवारा मतदान करके जो गांव का मुखिया चुना जाता है, उसे ग्राम प्रधान कहते है। यह गांव के विकास के प्रति उतरदायी होता है ।

शिक्षा – जीवन पर्यन्त चलने वाली शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो बालक के व्यवहार में परिवर्तन करके उसे एक योग्य नागरिक बनाती है। शिक्षा एक रोशनी की तरह है, जिससे अज्ञान रूपी अंधकार को दूर किया जा सकता है। यह हर प्रकार की स्थिति में जीने की राह दिखाती है।

प्राथमिक शिक्षा – पूर्व–प्राथमिक शिक्षा के बाद की शिक्षा ही प्राथमिक शिक्षा कहलाती है। प्राथमिक शिक्षा वह शिक्षा है जो बालक को प्रारंभ में ही दी जाती है। जिससे वह अपनी शिक्षा की शुरूआत करता है।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में शिक्षित पुरूष ग्राम प्रधान की भूमिका का अध्ययन।
2. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में अशिक्षित पुरूष ग्राम प्रधान की भूमिका का अध्ययन।

3. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में शिक्षित महिला ग्राम प्रधान की भूमिका का अध्ययन।
4. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में अशिक्षित महिला ग्राम प्रधान की भूमिका का अध्ययन ।
5. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में शिक्षित और अशिक्षित पुरूष ग्राम प्रधान की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन।
6. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में शिक्षित और अशिक्षित महिला ग्राम प्रधान की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन।
7. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में शिक्षित पुरूष और शिक्षित महिला ग्राम प्रधान की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में अशिक्षित पुरूष और अशिक्षित महिला ग्राम प्रधान की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन ।

परिकल्पनाएँ –

1. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में शिक्षित और अशिक्षित पुरूष ग्राम प्रधान की भूमिका में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में शिक्षित और अशिक्षित महिला ग्राम प्रधान की भूमिका में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में शिक्षित पुरूष और शिक्षित महिला ग्राम प्रधान की भूमिका में कोई सार्थक अन्तर नही है।
4. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में अशिक्षित पुरूष और अशिक्षित महिला ग्राम प्रधान की भूमिका में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन की परिसीमाएँ –

1. प्रस्तुत शोध फतेहाबाद जिले तक सीमित रहा है ।
2. प्रस्तुत शोध में गांवों के प्राथमिक स्तर तक के शिक्षा के विकास का अध्ययन किया गया।

International Journal in Management and Social Science
Volume 09 Issue 02, Feb 2021 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal Web of Science ResearcherID JTT-2321-1784

3. प्रस्तुत शोध द्वारा प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में ग्राम प्रधान की भूमिका का अध्ययन किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त विधि :–

अनुसंधानकर्ता ने उपरोक्त अध्ययन कार्य को पूर्ण करने हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

अध्ययन में प्रस्तुत न्यादर्शः–

अध्ययन के न्यादर्श के रूप में 20 गांव को लिया गया। 10 गांव में 5 शिक्षित पुरूष ग्राम प्रधान और 5 अशिक्षित पुरूष ग्राम प्रधान को लिया गया। प्रत्येक गांव में से 10 लोगों से आंकड़ें भरवाएं गए। बाकी के 10 गांवों में से 5 शिक्षित स्त्री ग्राम प्रधान व 5 अशिक्षित स्त्री ग्राम प्रधान को लिया गया और प्रत्येक गांव में से 10 लोगों से आंकड़े भरवाए गए। इस प्रकार कुल 200 ग्रामवासियों से प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में ग्राम प्रधान की भूमिका के बारे में आंकड़े एकत्रित किए गए।

न्यादर्श

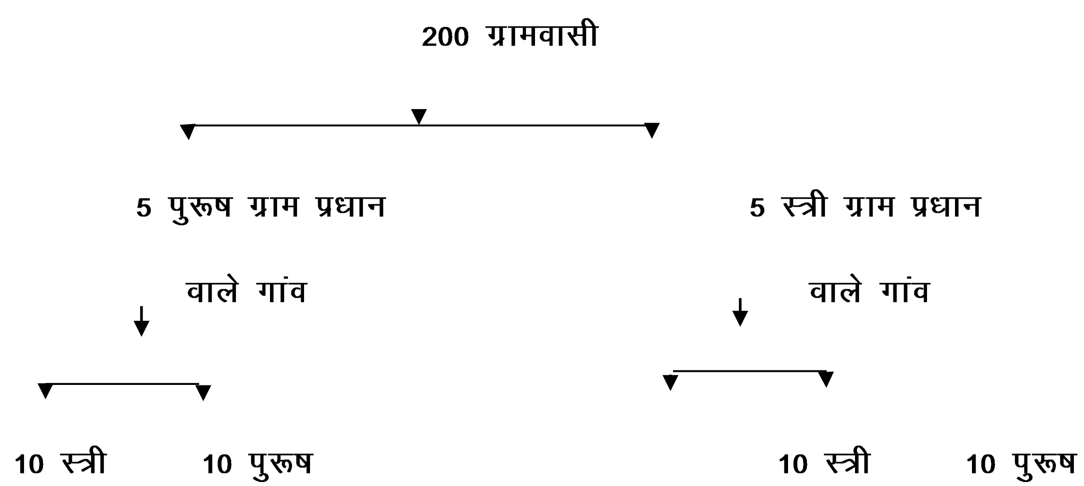

अध्ययन में प्रयुक्त जनसंख्याः–

प्रस्तुत शोध में फतेहाबाद जिले के दस गावों को जनसंख्या के रूप में लिया गया। इस अध्ययन में 10 ग्राम प्रधानों जिनमें 5 महिला ग्राम प्रधान और 5 पुरूष ग्राम प्रधान को लिया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्ता द्वारा आंकड़ों के संकलन करने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। जिसका प्रयोग ग्राम प्रधान का प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास के प्रति दृष्टिकोण को मापने के लिए किया गया ।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय पद्धतियाँ :–

आंकड़ो के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय पद्धतियों का विशेष महत्व है। अतः अध्ययन में निम्न प्रकार की सांख्यिकीय पद्धति का प्रयोग किया गया।

(क) माध्य (Mean) :–

उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों का नैतिक स्तर, मूल्य विकास, शैक्षणिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा को जानने के लिये प्रश्नावली के माध्यम ये प्राप्तांको का माध्य ज्ञात किया गया। माध्य समको के सेट का सारे मूल्यों के योग को मूल्यों की कुल संख्या से भाग देकर प्राप्त किया जाता है।

माध्य = $M = \frac{\sum X}{N}$

M = माध्य योग

Σ = योग वितरण में समक

X = वितरण में समक

N = समकों की संख्या

(ख) मानक विचलन (Standard deviation):–

विद्यार्थियों के प्राप्तांको का उनके औसत मान से विचलन देखने के लिए मानक विचलन निकाला जाता है।

International Journal in Management and Social Science
Volume 09 Issue 02, Feb 2021 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal **Web of Science ResearcherID JTT-2321-1784**

मानक विचलन को औसत विचलन का वर्गमूल भी कहा जाता है। यह वितरण के औसत से सब विचलनों के वर्गों के वर्गमूल का औसत है। प्रतिदर्श का मानक विचलन

$$SD = \sigma = \frac{\sqrt{\sum d^2}}{N} \quad \sqrt{\sum d^2}$$

σ = प्रतिदर्श का मानक विचलन

d = यथा प्राप्त आंकड़ो का मध्य बिन्दु से विचलन

N = मापों की संख्या

$\sqrt{\sum d^2}$ = प्राप्त संख्या का धनात्मक वर्गमूल

(ख) टी टैस्ट (T-Test):–

दो समूहों की तुलना करने के लिये टी–टैस्ट लगाया गया है।

$$T\text{-}Test = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2 + \sigma_2^2}{N1 + N2}}}$$

M_1 = मध्यमान पहले ग्रुप का

M_2 = मध्यमान दूसरे ग्रुप का

σ_1 = प्रमाणिक विचलन पहले ग्रुप का

σ_2 = प्रमाणिक विचलन दूसरे ग्रुप का

N_1 = पहले ग्रुप के आंकड़ो की संख्या

N_2 = दूसरे ग्रुप के आंकड़ो की संख्या

अध्ययन के परिणाम :–

1. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास मे शिक्षित पुरूष ग्राम प्रधान की भूमिका के अध्ययन में पाया गया कि 50 ग्रामवासी पुरूषों के विचारों के प्राप्तांकों का मध्यमान 17.92 पाया गया और प्रमाणित विचलन 0.89 पाया गया और 60% अंकमान पाया गया।

2. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में अशिक्षित पुरूष ग्राम प्रधान की भूमिका के अध्ययन में पाया गया कि 50 ग्रामवासी पुरूषों के विचारों के प्राप्तांकों का मध्यमान 16.36 पाया गया और प्रमाणित विचलन 0.563 पाया गया और 53.33% अंकमान पाया गया।

3. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में शिक्षित महिला ग्राम प्रधान की भूमिका के अध्ययन में पाया गया कि 50 ग्रामवासी महिलाओं के विचारों के प्राप्तांकों का मध्यमान 15.36 पाया गया और प्रमाणित विचलन 0.263 पाया गया और 50% अंकमान पाया गया।

4. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में अशिक्षित महिला ग्राम प्रधान की भूमिका के अध्ययन में पाया गया कि 50 महिला ग्रामवासी स्त्रियों के विचारों के प्राप्तांकों का मध्यमान 15.18 पाया गया और प्रमाणित विचलन 0.283 पाया गया और 50% अंकमान पाया गया।

5. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास मे शिक्षित और अशिक्षित पुरूष ग्राम प्रधान की भूमिका के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि 100 ग्रामवासी (जिसमें स्त्रियों और पुरूषों को शामिल किया गया।) के विचारों के प्राप्तांकों का मध्यमान 17.92 और 16.36 पाया गया और प्रमाणित विचलन 0.89 और 0.56 पाया गया। 'टी' का प्राप्त मान 13.79 हैं।

6. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास मे शिक्षित और अशिक्षित महिला ग्राम प्रधान की भूमिका के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि 100 ग्रामवासी (जिसमें स्त्रियों और पुरूषों को शामिल किया गया।) के विचारों के प्राप्तांकों का मध्यमान 15.36 और 15.18 पाया गया और प्रमाणित विचलन 0.26 और 0.28 पाया गया तथा 'टी' का प्राप्तमान 0 हैं।

7. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास मे शिक्षित पुरूष और शिक्षित महिला ग्राम प्रधान की भूमिका के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि 100 ग्रामवासी (जिसमें स्त्रियों और पुरूषों दोनों को शामिल

किया गया।) के विचारों के प्राप्तांकों का मध्यमान 17.92 और 15.36 पाया गया और प्रमाणित विचलन 0.89 और 0.26 पाया गया। 'टी' का प्राप्त मान 23.809 हैं।

8. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास मे अशिक्षित पुरूष और अशिक्षित महिला ग्राम प्रधान की भूमिका के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि 100 ग्रामवासी (जिसमें स्त्रियों और पुरूषों दोनों को शामिल किया गया) के विचारों के प्राप्तांकों का मध्यमान 16.36 और 15.18 पाया गया और प्रमाणित विचलन 0.56 और 0.28 पाया गया। 'टी' का प्राप्त मान 11.904 हैं।

अध्ययन के निष्कर्ष :–

1. अध्ययन के निष्कर्ष में पुरूष ग्राम प्रधानों की प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में 60% भूमिका पायी गयी है।
2. अध्ययन के निष्कर्ष में अशिक्षित पुरूष ग्राम प्रधानों की प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में 53. 33% भूमिका पायी गयी है।
3. अध्ययन के निष्कर्ष में शिक्षित महिला ग्राम प्रधानों की प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में 50% भूमिका पाई गयी है।
4. अध्ययन के निष्कर्ष में अशिक्षित महिला ग्राम प्रधानों की प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में 50% भूमिका पाई गयी है।
5. अध्ययन में पाया गया कि शिक्षित और अशिक्षित पुरूष ग्राम प्रधान का प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में सार्थक अन्तर हैं।
6. अध्ययन में पाया गया कि शिक्षित और अशिक्षित महिला ग्राम प्रधान का प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में सार्थक अन्तर नहीं हैं।
7. अध्ययन में पाया गया कि शिक्षित पुरूष और शिक्षित महिला ग्राम प्रधान का प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में सार्थक अन्तर हैं।

8. अध्ययन में पाया गया कि अशिक्षित पुरूष और अशिक्षित महिला ग्राम प्रधान का प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में सार्थक अन्तर हैं।

शैक्षिक निहितार्थ :–

1. यह अध्ययन महिला ग्राम प्रधान और पुरूष ग्राम प्रधान के दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाने के लिए उपयोगी है।
2. यह अध्ययन प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास के लिए उपयोगी है।
3. यह अध्ययन महिला ग्राम प्रधान की प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करने के लिए उपयोगी है।
4. यह अध्ययन शिक्षा के प्रति झुकाव को जानने के लिए उपयोगी है।
5. यह अध्ययन शिक्षित महिला ग्राम प्रधान और शिक्षित पुरूष ग्राम प्रधान की प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में कमियों को जानने के लिए उपयोगी है ताकि उसमें सुधार किया जा सके।
6. यह अध्ययन अशिक्षित महिला ग्राम प्रधान और अशिक्षित पुरूष ग्राम प्रधान की प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में कमियों को जानने के लिए उपयोगी है ताकि उसमें सुधार किया जा सके।
7. यह अध्ययन पुरूष ग्राम प्रधान और महिला ग्राम प्रधान का प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास के प्रति भूमिका योगदान और प्रभाव जानने के लिए उपयोगी है।
8. यह अध्ययन सरकार के द्वारा प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में किए गए कार्यो को जानने के लिए उपयोगी है।
9. यह प्राथमिक स्तर के छात्रों के लिए उपयोगी है ताकि वे सरकारी योजनाओं का लाभ उठा सकें।

5.5 आगामी शोध हेतु सुझाव :–

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र सीमित है। अध्ययनकर्ता द्वारा प्रस्तुत अध्ययन फतेहाबाद जिले के 20 गांवों में से प्रत्येक गाँव से 100 स्त्रियों व 100 पुरूषों पर किया गया। प्रस्तुत अध्ययन समय एवं साधनों की सीमाओं के अन्तर्गत सीमित रूप में किया गया है। इस प्रकार अन्य अध्ययन निम्नलिखित रूप में किये जा सकते है :–

International Journal in Management and Social Science
Volume 09 Issue 02, Feb 2021 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal Web of Science ResearcherID JTT-2321-1784

1. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास के लिए किए गए इस अध्ययन को माध्यमिक शिक्षा स्तर के लिए भी किया जा सकता है।

2. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास के लिए किए गए इस अध्ययन को उच्च शिक्षा स्तर के लिए भी किया जा सकता है।

3. ग्राम स्तर पर किए गए इस अध्ययन को खण्ड स्तर पर किया जा सकता है।

4. ग्राम स्तर पर किए गए इस अध्ययन को जिला स्तर और राज्य स्तर पर किया जा सकता है।

5. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में खण्ड शिक्षा अधिकारी की भूमिका का अध्ययन किया जा सकता हैं।

6. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में जिला शिक्षा अधिकारी की भूमिका का अध्ययन किया जा सकता हैं।

7. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के विकास में शिक्षा मंत्री की भूमिका का अध्ययन किया जा सकता हैं।